धान फसल में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन को लेकर प्रशिक्षण संपन्न

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा आज दिनांक 19 अगस्त 2023 को एससी एसपी योजना के अंतर्गत ग्राम सहतावन पुरवा में धान फसल में पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का सफल आयोजन कराया गया । जिसका आज समापन हुआ। कार्यक्रम में कृषको से वार्ता करते हुए केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने बताया की धान की अधिक पैदावार के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एक महत्वपूर्ण उपाय हैं, जिसमें रसायनिक उर्वरक, सूक्ष्म पोषक तत्व, जैविक उर्वरक, हरी-नीली शैवाल, गोबर की खाद एवं हरी खाद आदि का समुचित उपयोग किया जाता हैं। धान के उत्पादन में मुख्य पोषक तत्व नाइट्रोजन (नत्रजन), फास्फोरस (स्फुर), पोटाश, जिंक (जस्ता) आदि महत्वपूर्ण हैं जिनकी भरपाई किसानों द्वारा रसायनिक उर्वरकों की मदद से की जाती हैं, किंतु एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन सभी प्रकार के आदानों को आवश्यकतानुसार उपयोग करके को बढ़ावा देता हैं। मृदा के स्वास्थ्य को बनाये रखने, मृदा की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने एवं लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ाने के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हैं। कार्यक्रम में डॉ खलील खान मृदा वैज्ञानिक ने जानकारी दी।

धान की फसल के लिये 100 से 120 किग्रा नाइट्रोजन, 50-60 किग्रा फास्फोरस एवं 30-50 किग्रा/हैक्टेयर पोटाश की मात्रा की सिफारिश की जाती है। खेत तैयार करते समय खेत में सड़ी हुई गोबर खाद अथवा कम्पोस्ट खाद का 10-12 टन का प्रयोग किया जाये तो इससे नाइट्रोजन का अधिक उपयोग हो पाता हैं एवं पोषक तत्व प्राप्त होने के साथ-साथ मृदा का भौतिक स्तर में भी सुधार होता हैं । इसके अलावा धान में कुछ सूक्ष्म पोषक तत्वों का भी महत्व है । जैसे जिंक यानी जस्ता और आइरन यानी लौह। ऐसी मृदा जिसमें जस्ते की कमी पाई जाती है उनमें जस्ते की कमी के कारण फसल में कल्ले फूटने में कमी, पौधों में असमान वृद्धि, बौने पौधों की पत्तियों में भूरे रंग के धब्बे पडना एवं नयी पत्तियों की निचली सतह की मिडरिव में हरिमाहीनता पत्तियों का अपेक्षाकृत सकरा होना, आदि लक्षण दिखाई देते हैं। मृदा में जिंक (जस्ते) की इस कमी को पूरा करने के लिये जिंक सल्फेट की 25 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करना चाहिए लोहे की कमी को क्लोरोसिस के नाम से जाना जाता है। लोहे की कमी को दूर करने के लिये 1 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 100 ली. पानी में घोल कर सात दिनों में एक बार छिड़काव करना चाहिए।

ढैचा की फसल से तैयार की गई हरी खाद का उपयोग भी धान की फसल में लोह तत्व की पूर्ति करता है। 0.2 टन/हैक्टेयर जिप्सम पायरायट देने से लोहे एवं गंधक की आवश्यकता पूरी होती हैं। कार्यक्रम में छुन्ना लाल, विजय पाल, कन्हैया लाल, जिलेदार समेत 50 कृषको एवम महिलाओं ने प्रतिभाग किया । कार्यक्रम में डॉ निमिषा उपस्थित रही।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

जी20 : डिजिटल अर्थव्यवस्था मंत्रियों की... 12

गन्ना किसानों की समस्याओं के प्रति प्रदेश सरकार... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 306
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
रविवार | 20 अगस्त, 2023

सीएसए द्वारा धान फसल में पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित

जन एक्सप्रेस। प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में एससी एसपी योजना के अंतर्गत शनिवार को ग्राम सहतावन पुरवा में धान फसल में पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन हुआ। इस अवसर पर केंद्र के प्रभारी डॉ.अजय कुमार सिंह ने धान की अधिक पैदावार के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन को एक महत्वपूर्ण उपाय बताया। जिसमें रसायनिक उर्वरक, सूक्ष्म पोषक तत्व, जैविक उर्वरक, हरी-नीली शैवाल, गोबर की खाद एवं हरी खाद आदि का समुचित उपयोग किया जाता हैं। डॉ. खलिल खान ने बताया कि धान के उत्पादन में मुख्य पोषक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, जिंक महत्वपूर्ण हैं जिनकी भरपाई किसानों द्वारा रसायनिक उर्वरकों की मदद से की जाती हैं। उन्होंने बताया कि ऐसी मृदा जिसमें जस्ते की कमी पाई जाती है उनमें जस्ते की कमी के कारण फसल में कल्ले फूटने में कमी, पौधों में असमान वृद्धि, बौने पौधों की पत्तियों में भूरे रंग के धब्बे पडना एवं नयी पत्तियों की निचली सतह की मिडरिव में हरिमाहीनता पत्तियों का अपेक्षाकृत सकरा होना आदि लक्षण दिखाई देते हैं।इसके साथ ही उन्होंने मृदा में जस्ते की कमी को दूर करने के उपाय के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम मे डॉ.निमिषा सहित 50 कृषको एवम महिलाओं ने प्रतिभाग किया।

कम्पोस्ट खाद के प्रयोग से होता है नाइट्रोजन का अधिक उपयोग

मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान ने बताया कि धान की फसल के लिये 100 से 120 किग्रा नाइट्रोजन, 50-60 किग्रा फास्फोरस एवं 30-50 किग्रा/हैक्टेयर पोटाश की मात्रा अच्छी रहती है। खेत तैयार करते समय खेत में सड़ी हुई गोबर खाद अथवा कम्पोस्ट खाद का 10-12 टन का प्रयोग किया जाये तो इससे नाइट्रोजन का अधिक उपयोग हो पाता हैं एवं पोषक तत्व प्राप्त होने के साथ-साथ मृदा के भौतिक स्तर में भी सुधार होता हैं।

SKS NEWS

हिन्दी दैनिक

समाज का साथी

कानपुर नगर से प्रकाशित

अंक: 354 | कानपुर, रविवार 20 अगस्त-2023 | पृष्ठ -8

किनार स्थित भवना म दा

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

कानपुर 7 सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा 19 अगस्त को एससी एसपी योजना के अंतर्गत ग्राम सहतावन पुरवा में धान फसल में पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का सफल आयोजन कराया गया । जिसका आज समापन हुआ। कार्यक्रम में कृषको से वार्ता करते हुए केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने बताया की धान की अधिक पैदावार के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एक महत्वपूर्ण उपाय हैं, जिसमें रसायनिक उर्वरक, सूक्ष्म पोषक तत्व, जैविक उर्वरक, हरी-नीली शैवाल, गोबर की खाद एवं हरी खाद आदि का समुचित उपयोग किया जाता हैं। धान के उत्पादन में मुख्य पोषक तत्व नाइट्रोजन (नत्रजन), फास्फोरस (स्फुर), पोटाश, जिंक (जस्ता) आदि महत्वपूर्ण हैं जिनकी भरपाई किसानों द्वारा रसायनिक उर्वरकों की मदद से की जाती हैं, किंतु एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन सभी प्रकार के आदानों को आवश्यकतानुसार उपयोग करके को बढ़ावा देता हैं। मृदा के स्वास्थ्य को बनाये रखने, मृदा की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने एवं लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ाने के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हैं। कार्यक्रम में डॉ खलील खान मृदा वैज्ञानिक ने जानकारी दी कि धान की फसल के लिये 100 से 120 किग्रा नाइट्रोजन, 50-60 किग्रा फास्फोरस एवं 30-50 किग्रा/हैक्टेयर पोटाश की मात्रा की सिफारिश की जाती है। खेत तैयार करते समय खेत में सड़ी हुई गोबर खाद अथवा कम्पोस्ट खाद का 10-12 टन का प्रयोग किया जाये तो इससे नाइट्रोजन का अधिक उपयोग हो पाता हैं एवं पोषक तत्व प्राप्त होने के साथ-साथ मृदा का भौतिक स्तर में भी सुधार होता हैं । इसके अलावा धान में कुछ सूक्ष्म पोषक तत्वों का भी महत्व है । जैसे जिंक यानी जस्ता और आइरन यानी लौह।

ऐसी मृदा जिसमें जस्ते की कमी पाई जाती है उनमें जस्ते की कमी के कारण फसल में कल्ले फूटने में कमी, पौधों में असमान वृद्धि, बौने पौधों की पत्तियों में भूरे रंग के धब्बे पडना एवं नयी पत्तियों की निचली सतह की मिडरिव में हरिमाहीनता पत्तियों का अपेक्षाकृत सकरा होना, आदि लक्षण दिखाई देते हैं। मृदा में जिंक (जस्ते) की इस कमी को पूरा करने के लिये जिंक सल्फेट की 25 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करना चाहिए लोहे की कमी को क्लोरोसिस के नाम से जाना जाता है। लोहे की कमी को दूर करने के लिये 1 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 100 ली. पानी में घोल कर सात दिनों में एक बार छिड़काव करना चाहिए। ढैचा की फसल से तैयार की गई हरी खाद का उपयोग भी धान की फसल में लोह तत्व की पूर्ति करता है। 0.2 टन/हैक्टेयर जिप्सम पायरायट देने से लोहे एवं गंधक की आवश्यकता पूरी होती हैं।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 15 अंक : 52 कानपुर, रविवार 20 अगस्त 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

aswaroop.in

पोषक तत्व प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा 19 अगस्त को एससी एसपी योजना के अंतर्गत ग्राम सहतावन पुरवा में धान फसल में पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का सफल आयोजन कराया गया। जिसका आज समापन हुआ। कार्यक्रम में कृषको से वार्ता करते हुए केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने बताया की धान की अधिक पैदावार के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एक महत्वपूर्ण उपाय हैं, जिसमें रसायनिक उर्वरक, सूक्ष्म पोषक तत्व, जैविक उर्वरक, हरी-नीली शैवाल, गोबर की खाद एवं हरी खाद आदि का समुचित उपयोग किया जाता हैं। धान के उत्पादन में मुख्य पोषक तत्व नाइट्रोजन (नत्रजन), फास्फोरस (स्फुर), पोटाश, जिंक (जस्ता) आदि महत्वपूर्ण हैं जिनकी भरपाई किसानों द्वारा रसायनिक उर्वरकों की मदद से की जाती हैं, किंतु एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन सभी प्रकार के आदानों को आवश्यकतानुसार उपयोग करके को बढ़ावा देता हैं। मृदा के स्वास्थ्य को बनाये रखने, मृदा की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने एवं लाभकारी सूक्ष्म जीवों

की संख्या बढ़ाने के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हैं। कार्यक्रम में डॉ खलील खान मृदा वैज्ञानिक ने जानकारी दी कि धान की फसल के लिये 100 से 120 किग्रा नाइट्रोजन, 50-60 किग्रा फास्फोरस एवं 30-50 किग्रा/हैक्टेयर पोटाश की मात्रा की सिफारिश की जाती है। खेत तैयार करते समय खेत में सड़ी हुई गोबर खाद अथवा कम्पोस्ट खाद का 10-12 टन का प्रयोग किया जाये तो इससे नाइट्रोजन का अधिक उपयोग हो पाता हैं एवं पोषक तत्व प्राप्त होने के साथ-साथ मृदा का भौतिक स्तर में भी सुधार होता हैं । इसके अलावा धान में कुछ सूक्ष्म पोषक तत्वों का भी महत्व है । जैसे जिंक यानी जस्ता और आइरन यानी लौह। ऐसी मृदा जिसमें जस्ते की कमी पाई जाती है उनमें जस्ते की कमी के कारण फसल में कल्ले फूटने में कमी, पौधों में असमान वृद्धि, बौने पौधों की पत्तियों में भूरे रंग के धब्बे पडना एवं नयी पत्तियों की निचली सतह की मिडरिव में हरिमाहीनता पत्तियों का अपेक्षाकृत सकरा होना, आदि लक्षण दिखाई देते हैं। मृदा में जिंक (जस्ते) की इस कमी को पूरा करने के लिये जिंक सल्फेट की 25 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करना चाहिए लोहे की कमी को क्लोरोसिस के नाम से जाना जाता है। लोहे की कमी को दूर करने के लिये 1 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 100 ली. पानी में घोल कर सात दिनों में एक बार छिड़काव करना चाहिए। ढैचा की फसल से तैयार की गई हरी खाद का उपयोग भी धान की फसल में लोह तत्व की पूर्ति करता है। 0.2 टन/हैक्टेयर जिप्सम पायरायट देने से लोहे एवं गंधक की आवश्यकता पूरी होती हैं। कार्यक्रम में छुन्ना लाल, विजय पाल, कन्हैया लाल, जिलेदार समेत 50 कृषको एवम महिलाओं ने प्रतिभाग किया । कार्यक्रम में डॉ निमिषा उपस्थित रही।

पशुओं को गलाघोटू रोग से बचाने हेतु केवीके ने लगाया टीकाकरण शिविर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा संचालित निकरा परियोजना के अंतर्गत गांव औरंगाबाद में डॉक्टर अरुण सिंह के द्वारा पशु टीकाकरण शिविर लगवाया गया।जिसमें लगभग 250 पशुओं का टीकाकरण पशुपालन विभाग के सहयोग से कराया गया। इसमें पशुपालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत ने बताया कि वर्षा ऋतु में पहले पशुओं को गला घोटू रोग का टीकाकरण अवश्य करवा देना चाहिए।जिससे हमारे कीमती जानवर को गला घोटू रोग से प्रभावित होने के पूर्व बचाया जा सके।साथ ही डॉ शशिकांत के द्वारा किसानों को अंतः एवं वाह्य परजीवीयों का नियंत्रण विषय पर प्रशिक्षण दिया गया।इसके अंतर्गत किसानों को बताया गया कि पशु के अंदर पेट में कीड़े हो जाते हैं जिसकी वजह से पशु का दूध उत्पादन क्षमता प्रजनन क्षमता एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है।जिससे किसानों का काफी नुकसान होता है। इसको रोकने के लिए काशीपुर के पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ श्याम दीक्षित ने बताया कि प्रत्येक 3 महीने में पशुपालक भाई अपने पशुओं को पेट के कीड़ा की दवा देते रहें तो उनका पशु हमेशा स्वस्थ बना रहेगा।इस कार्यक्रम को आयोजित करने वाले डॉक्टर अरुण सिंह ने बताया कि इस योजना को ग्राम औरंगाबाद में पूर्ण रुप से लागू किया गया है।इस मौके पर गांव के लगभग 50 लोग मौजूद रहे।

अमर भारती
एक उम्मीद
मूल्य: 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com रविवार, 20 अगस्त 2023

पोषक तत्व प्रबंधन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

कानपुर, अमर भारती। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा 19 अगस्त को एससी एसपी योजना के अंतर्गत ग्राम सहतावन पुरवा में धान फसल में पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का सफल आयोजन कराया गया । जिसका आज समापन हुआ। कार्यक्रम में कृषकों से वार्ता करते हुए केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने बताया की धान की अधिक पैदावार के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एक महत्वपूर्ण उपाय हैं, जिसमें रसायनिक उर्वरक, सूक्ष्म पोषक तत्व, जैविक उर्वरक, हरी-नीली शैवाल, गोबर की खाद एवं हरी खाद आदि का समुचित उपयोग किया जाता हैं। धान के उत्पादन में मुख्य पोषक तत्व नाइट्रोजन (नत्रजन), फास्फोरस (स्फुर), पोटाश, जिंक (जस्ता) आदि महत्वपूर्ण हैं जिनकी भरपाई किसानों द्वारा रसायनिक उर्वरकों की मदद से की जाती हैं।

Title-code: UPHIN-48963 E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर

समाचार पत्र

20,08,2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल 9956834016

Top News

पत्रकार जीतेन्द्र सिंह पटेल

धान फसल में एससी एसपी योजना अन्तर्गत एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

पत्रकार जीतेन्द्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर द्वारा आज दिनांक 19 अगस्त 2023 को एससी एसपी योजना के अंतर्गत ग्राम सहतावन पुरवा में धान फसल में पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का सफल आयोजन कराया गया । जिसका आज समापन हुआ। कार्यक्रम में कृषको से वार्ता करते हुए केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने बताया की धान की अधिक पैदावार के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एक महत्वपूर्ण उपाय हैं, जिसमें रसायनिक उर्वरक, सूक्ष्म पोषक तत्व, जैविक उर्वरक, हरी-नीली शैवाल, गोबर की खाद एवं हरी खाद आदि का समुचित उपयोग किया जाता हैं। धान के उत्पादन में मुख्य पोषक तत्व नाइट्रोजन (नत्रजन), फास्फोरस (स्फुर), पोटाश, जिंक (जस्ता) आदि महत्वपूर्ण हैं जिनकी भरपाई किसानों द्वारा रसायनिक उर्वरकों की मदद से की जाती हैं, किंतु एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन सभी प्रकार के आदानों को आवश्यकतानुसार उपयोग करके को बढ़ावा देता हैं। मृदा के स्वास्थ्य को बनाये रखने, मृदा की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने एवं लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ाने के लिये एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हैं। कार्यक्रम में डॉ खलील खान मृदा वैज्ञानिक ने जानकारी दी कि धान की फसल के लिये 100 से 120 किग्रा नाइट्रोजन, 50-60 किग्रा फास्फोरस एवं 30-50 किग्रा/ हैक्टेयर पोटाश की मात्रा की सिफारिश की जाती है। खेत तैयार करते समय खेत में सड़ी हुई गोबर खाद अथवा कम्पोस्ट खाद का 10-12 टन का प्रयोग किया जाये तो इससे नाइट्रोजन का अधिक उपयोग हो पाता हैं एवं पोषक तत्व प्राप्त होने के साथ-साथ मृदा का भौतिक स्तर में भी सुधार होता हैं । इसके अलावा धान में कुछ सूक्ष्म पोषक तत्वों का भी महत्व है । जैसे जिंक यानी जस्ता और आइरन यानी लौह। ऐसी मृदा जिसमें जस्ते की कमी पाई जाती है उनमें जस्ते की कमी के कारण फसल में कल्ले फूटने में कमी, पौधों में असमान वृद्धि, बौने पौधों की पत्तियों में भूरे रंग के धब्बे पडना एवं नयी पत्तियों की निचली सतह की मिडरिव में हरिमाहीनता पत्तियों का अपेक्षाकृत सकरा होना, आदि लक्षण दिखाई देते हैं। मृदा में जिंक (जस्ते) की इस कमी को पूरा करने के लिये जिंक सल्फेट की 25 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करना चाहिए ।लोहे की कमी को क्लोरोसिस के नाम से जाना जाता है। लोहे की कमी को दूर करने के लिये 1 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 100 ली. पानी में घोल कर सात दिनों में एक बार छिड़काव करना चाहिए। ढैचा की फसल से तैयार की गई हरी खाद का उपयोग भी धान की फसल में लोह तत्व की पूर्ति करता है। 0.2 टन/हैक्टेयर जिप्सम पायरायट देने से लोहे एवं गंधक की आवश्यकता पूरी होती हैं। कार्यक्रम में छुन्ना लाल, विजय पाल, कन्हैया लाल, जिलेदार समेत 50 कृषको एवम महिलाओं ने प्रतिभाग किया । कार्यक्रम में डॉ निमिषा उपस्थित रही।